CBSE Class 10 - Hindi A

Sample Paper - 03

Maximum Marks: 80

Time Allowed: 3 hours

General Instructions:

- इस प्रश्न-पत्र भें चार खंड हैं - क, ख, ग औय घ ।
- सबी खंडों के प्रशनों उत्तर देना अनिवार्य हैं।
- यथासंभव् प्रत्येक खंड के प्रशनों के उत्तर क्रम से लिखिए।
- एक अंक के प्रशनों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
- तीन अंको के प्रशनों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

Section A

1. **निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (10)**

   भारत में हरित क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश को खाद्यान्न मामले में आत्मनिर्भर बनाना था, लेकिन इस बात की आशंका किसी को नहीं थी कि रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध इस्तेमाल न सिर्फ खेतों में, बल्कि खेतों से बाहर मंडियों तक में होने लगेगा। विशेषज्ञों के मुताबिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है। लेकिन जिस रफ्तार से देश की आबादी बढ़ रही है, उसके मद्देनज़र फसलों की अधिक पैदावार ज़रूरी थी । समस्या सिर्फ रासायनिक खादों के प्रयोग की ही नहीं है। देश के ज्यादातर किसान परंपरागत कृषि से दूर होते जा रहे हैं। दो दशक पहले तक हर किसान के यहाँ गाय, बैल और भैंस खूँटों से बँधे मिलते थे। अब इन मवेशियों की जगह ट्रैक्टर-ट्रॉली ने ले ली है। परिणाम स्वरूप गोबर और धूरे की राख से बनी कंपोस्ट खाद खेतों में गिरनी बंद हो गई। पहले चैत-बैसाख में गेहूँ की फसल कटने के बाद किसान अपने खेतों में गोबर, राख और पत्तों से बनी जैविक खाद डालते थे। इससे न सिर्फ खेतों की उर्वराशक्ति बरकरार रहती थी, बल्कि इससे किसानों को आर्थिक लाभ के अलावा बेहतर गुणवत्ता वाली फसल मिलती थी।

   i. भारत में हरित-क्रांति का मुख्य उद्देश्य क्या था?
   ii. जैविक खाद किसे कहते हैं?
   iii. हरित क्रांति का क्या दुष्परिणाम सामने आया?
   iv. रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा देने का क्या कारण था?
   v. जैविक खाद की क्या विशेषता होती है?
   vi. उपरोक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए।

Section B

2. **निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. जीवन की कुछ चीजें हैं जिन्हें हम कोशिश करके पा सकते हैं। (आश्रित उपवाक्य छाँटकर उसका भेद भी लिखिए।)
   ii. मोहनदास, गोकुलदास सामान निकालकर बाहर रखते जाते थे। (संयुक्त वाक्य में बदलिए।)
   iii. हमें स्वयं करना पड़ा और पसीने छूट गए। (मिश्रवाक्य में बदलिए।)
   iv. हमारे दादाजी ने हमें सिखाया है कि मेहनत करो परिणाम की चिंता मत करो। (आश्रित उपवाक्य छाँट कर उसका भेद लिखें।)

3. **निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए- (4)**

   i. असुर सदा सुरों को सताते रहे हैं। (कर्मवाच्य में)
   ii. जयचंद तारा पृथ्वीराज को धोखा दिया गया था। (कर्तृवाच्य में)
   iii. सुरेन्द्र से ज्यादा नहीं चला जाता। (कर्तृवाच्य में)
   iv. छात्राएँ ज्यादा देर चुप नहीं बैठतीं। (भाववाच्य में)

4. **रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए- (4)**

   i. असली परीक्षा <u>अब</u> थी।
   ii. जो <u>दायित्व</u> मुझे सौंपा गया था।
   iii. उसके लिए <u>मैं</u> सक्षम हूँ।
   iv. उसको लेकर <u>गहरा</u> संदेह मेरे भीतर था।

5. **निम्न प्रश्नों के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए- (4)**

   i. करुण रस' का स्थायी भाव लिखिए।
   ii. 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है?
   iii. 'रौद्र' रस का एक उदाहरण दीजिए।
   iv. सरकंडे से हाथ-पांय और मटके जैसो पेट।
   पिचके पिचके गाल दोउ मुंह तो इण्डिया गेट। में रस बताइए।

Section C

6. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- (6)**

किसी दिन एक शिष्या ने डरते-डरते खाँ साहब को टोका, “बाबा! आप यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारतरत्न भी मिल चुका है, यह फटी तहमद न पहना करें। अच्छा नहीं लगता, जब भी कोई आता है आप इसी फटी तहमद में सबसे मिलते हैं।' खाँ साहब मुसकराए| लाड़ से भरकर बोले, “धत् ! पगली ई भारतरत्न हमको शहनईया

पे मिला है, लुंगिया पे नाहीं । तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते, तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई। तब क्या ख़ाक रियाज़ हो पाता । ठीक है बिटिया, आगे से नहीं पहनेंगे, मगर इतना बताए देते हैं कि मालिक से यही दुआ है, फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या हैं, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

i. शिष्या के टोकने को बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा क्यों नहीं माना?
ii. किसी भी कला या कार्य की सफलता में रियाज़ का कितना योगदान होता है, गद्यांश के आधार पर लिखिए।
iii. 'तुम लोगों की तरह बनाव सिंगार देखते रहते तो उमर ही बीत जाती, हो चुकती शहनाई।' उपर्युक्त कथन में युवावर्ग के लिए क्या संदेश है?

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

i. बालगोबिन भगत पतोह के पुनर्विवाह के रूप में समाज की किस समस्या का समाधान प्रस्तुत करना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

ii. लखनवी अंदाज़ पाठ के अनुसार बताइए कि नवाब साहब ने खीरे किस उद्देश्य से ख़रीदे थे? वे कितने खीरे थे और लेखक के उस डिब्बे में दाखिल होते समय वे किस स्थिति में रखे रहे? इस दृश्य से किस बात का अनुमान किया जा सकता है?

iii. फ़ादर बुल्के को भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग किस आधार पर कहा गया है?

iv. अपनों का विश्वासघात मनुष्य को अधिक कचोटता है-यह कहानी यह भी पाठ के आधार पर विचार दीजिए।

v. मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के किन गुणों की चर्चा अपनी आत्मकथा में की हैं?

8. **निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (6)**

यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
धन्य तुम, माँ भी तुम्हारी धन्य!
चिर प्रवासी मैं इतर, मैं अन्य!
इस अतिथि से प्रिय तुम्हारा क्या रहा सम्पर्क
अँगुलियाँ माँ की कराती रही हैं मधुपर्क
देखते तुम इधर कनखी मार
और होतीं जब कि आँखें चार
तब तुम्हारी दंतुरित मुसकान
मुझे लगती बड़ी ही छविमान !

i. कनखी मारना' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

ii. कवि ने अपने लिए किन-किन विशेषणों का प्रयोग किया है और क्यों?

iii. कवि किसके माध्यम से बच्चे की दंतुरित मुसकान देखने में सफल हुआ?

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये: **(8)**

    i. उत्साह गीत में कवि ने किसे संबोधित किया है ?

    ii. संगतकार कविता में संगतकार त्याग की मूर्ति है, कैसे?

    iii. तन-सुगंध शेष रही बीत गई यामिनी पंक्ति का आधार समझाइए। (छाया मत छूना)

    iv. 'उसे सुख का आभास तो होता था, लेकिन दुःख बाँचना नहीं आता था', 'कन्यादान' कविता के आधार पर भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

    v. लक्ष्मण ने सीता स्वयंवर में किस मुनि को चुनौती दी ? क्यों और कैसे?

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये: **(6)**

    i. 'माता का आँचल' पाठ में बच्चे को अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

    ii. नाक मान-सम्मान व प्रतिष्ठा का घोतक है। यह बात पूरी व्यंग्य रचना में किस तरह उभरकर आई हैं। लिखिए।

    iii. सिक्किम के यात्रा-वृत्तांत में लेखिका को सीमा पर तैनात सैनिकों को देखकर किस प्रकार की अनुभूति हुई? साना-साना हाथ जोड़ि पाठ के आधार पर बताइए।

11. **मोबाइल फोन का दुरुपयोग** विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए। **(10)**

    - वर्तमान में आवश्यक
    - उपयोगिता
    - हानि
    - उपसंहार।

OR

प्रदूषण की समस्या विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- प्रदूषण का अर्थ

- वायु प्रदूषण
- जल प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण
- प्रदूषण के दुष्परिणाम
- प्रदूषण के कारण
- प्रदूषण का निवारण

OR

राष्ट्रीय एकता विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दो में निबंध लिखिए।

- राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय
- राष्ट्रीय एकता की बाधाएँ
- उपसंहार ।

12. आपके विद्यालय में आए-दिन छात्रों की कोई न कोई वस्तु गुम हो जाने की घटनाएँ घटित हो रही हैं। कल आपके एक सहपाठी की साइकिल चोरी हो गई थी। इस सम्बन्ध में एक प्रार्थना-पत्र लिखकर माननीय प्रधानाचार्य महोदय को अवगत कराइए। **(5)**

OR

सामाजिक सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत किसी ग्राम में सफाई अभियान के अनुभवों का उल्लेख करते हुए मित्र को पत्र लिखिए।

13. किसी राज्य के पर्यटन विभाग की ओर से राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 25-50 शब्दों का एक विज्ञापन तैयार कीजिए। **(5)**

OR

आप सिक्योरिटी सविर्सेज कम्पनी चलाते हैं। आपको सिविल (सुपरवाइजर) गार्ड की आवश्यकता है, इसके लिए 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

CBSE Class 10 - Hindi A
Sample Paper - 03

Answer
Section A

1. i. भारत में हरित-क्रांति का मुख्य उद्देश्य देश को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना था और बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं को पूरा करना था।
   ii. गोबर,धूरे की राख और पत्तों से बनी खाद को जैविक खाद कहते हैं।इसमें किसी भी प्रकार के रसायनों का प्रयोग नहीं होता।
   iii. हरित क्रांति के कारण रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग खेतों में फसलों को तैयार करने और मंडियों में फलों-सब्जियों आदि को पकाने में होने लगा जो खाद्यान्न की गुणवत्ता के लिए सही नहीं है।
   iv. देश की जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि के कारण उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए फसलों की अधिक पैदावार जरुरी थी। जैविक कृषि से यह पूर्ति संभव नहीं थी इसलिए रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा देना पड़ा।
   v. **जैविक** खाद से खेतों की उर्वरा शक्ति बनी रहती है । इसमें लगत भी कम आती है जिससे किसानों को आर्थिक लाभ होता है और बेहतर गुणवत्ता वाली फसल भी मिलती है।
   vi. आधुनिक बनाम प्रारंपरागत कृषि

Section B

2. i. जिन्हें हम कोशिश करके पा सकते हैं। (विशेषण उपवाक्य।)
   ii. मोहनदास, गोकुलदास सामान निकालते थे और उसे बाहर रखते जाते थे। (संयुक्त वाक्य)
   iii. जब हमने स्वयं किया तब पसीने छूट गए। (मिश्रित वाक्य)
   iv. कि मेहनत करो परिणाम की चिंता मत करो। (संज्ञा उपवाक्य)
3. i. असुरों के द्वारा सदा सुर सताए जाते रहे हैं।
   ii. जयचंद ने पृथ्वीराज को धोखा दिया था।
   iii. सुरेन्द्र ज्यादा चल नहीं सकता।
   iv. छात्राओं से ज्यादा देर चुप नहीं बैठा जाता।
4. i. **अब-** क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'थी' क्रिया की विशेषता।
      काल वाचक क्रिया विशेषण, विशेष्य- 'थी'।
   ii. **दायित्व-** भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक।
   iii. **मैं-** पुरुषवाचक सर्वनाम,पुल्लिंग/स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ताकारक।
      पुरुषवाचक सर्ववनाम, उत्तम पुरुष ,एकवचन, पुल्लिंग/ स्त्रीलिंग, कर्ता कारक।
   iv. **गहरा-** गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, 'संदेह' की विशेषता।

5. i. करुण रस का स्थायी भाव है - शोक।
   ii. वीर रस ।
   iii. उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उनका लगा। मानो हवा के वेग से सोता हुआ सागर जगा।
   iv. हास्य रस ।

Section C

6. i. शिष्या के टोकने को बिस्मिल्ला खाँ ने बुरा नहीं माना, क्योंकि उसके विचारों और व्यवहार में उदारता व अपनत्व का भाव था।
   ii. किसी भी कला या कार्य की सफलता के लिएअभ्यास का होना बहुत ही आवश्यक है। अभ्यास के बिना कला या कार्य के स्तर और गुणवत्ता में कमी आने लगती है, यही कारण था कि बिस्मिल्ला खाँ आजीवन अभ्यास करते रहे।
   iii. उपर्युक्त कथन में युवावर्ग के लिए यह संदेश है कि बनाव-श्रृंगार पर ध्यान न देकर अपने लक्ष्य (उद्देश्य) के प्रति एकनिष्ठता और एकाग्रता रखनी चाहिए। तभी वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।
7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

   i. हमारे समाज में विधवा विवाह को शास्त्र सम्मत नहीं समझा जाता | लोग इसे स्वीकृति नहीं देते | बालगोबिन भगत इस प्रकार की प्रत्येक रूढ़िवादिता के विरोधी थे | उनकी मान्यता थी कि विधवा को भी अपना जीवन जीने का पूर्ण अधिकार है | भगत के द्वारा अपनी पतोहू के पुनर्विवाह के रूप में समाज की इसी समस्या का समाधान लेखक ने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |

   ii. नवाब साहब ने संभवतया खीरे सफ़र में समय व्यतीत करने के उद्देश्य से खरीदे होंगे | खीरे दो थे | लेखक के उस डिब्बे में दाखिल होते समय वे बर्थ पर एक साफ़ तौलिए पर रखे हुए थे | इस दृश्य से नवाब साहब की नजाकत और लखनवी संस्कृति का अनुमान लगाया जा सकता है |

   iii. फादर बुल्के भारतीय संस्कृति में पूरी तरह रच-बस गए थे | अपने देश का नाम पूछने पर वह भारत को ही अपना देश बताते थे | यहाँ आकर उन्होंने धर्माचार की पढ़ाई की और कोलकाता से बी. ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। साथ ही प्रयोग विश्वविद्यालय से 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास' विषय पर शोध प्रबंध तैयार किया। वे हिन्दी और संस्कृत के विभागाध्यक्ष रहे। जहाँ हिन्दीभाषी हिंदी की उपेक्षा करते थे वहीँ उन्हें हिंदी से विशेष लगाव था और वे उसे राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। इससे सिद्ध होता है कि फादर बुल्के भारतीय संस्कृति के एक अभिन्न अंग थे |

   iv. अपनों के द्वारा दिए गए विश्वासघात की चोट शरीर पर न लगकर सीधे हृदय पर लगती है, इस चोट को मनुष्य आजीवन नहीं भूल पाता । शत्रु से सावधान रहने की सीख तो मनुष्य को सबसे मिल जाती है पर अपनों के द्वारा विश्वासघात करने से नई संस्कृति का जन्म होता है, इससे प्रत्येक व्यक्ति सबके प्रति सशंकित और कुंठित रहता है। वह एकाकी जीवन जीने के लिए विवश हो जाता है। ऐसी स्थिति में उसमें अविश्वास की भावना जन्म लेती है।

v. मन्नू भंडारी ने अपनी माँ के इन गुणों की चर्चा अपनी आत्मकथा में की है कि वे धरती से कुछ ज्यादा ही धैर्यवान और सहनशील थीं | पिता की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर फरमाइश को बड़ी ही सहजता से पूरा करती | अपने लिए उन्होंने पूरी जिंदगी कभी कुछ नहीं माँगा | लेखिका और उनके भाई-बहनों का माँ से जो लगाव था वह भी सहानुभूति से उपजा हुआ था |

8. i. 'कनखी मारना' का अर्थ है तिरछी निगाहों से देखना।

ii. कवि यायावरी प्रवृत्ति का है इसलिए उसने अपने लिए प्रवासी सा अनजान, इतर व अतिथि आदि विशेषणों का प्रयोग किया। कवि ने स्वयं को चिर- प्रवासी व अतिथि कहा है क्योंकि अपनी घुमक्कड़ प्रवृत्ति के कारण वे अक्सर घर से बाहर रहा करते थे। लंबे समय तक प्रवास करते रहने की आदत के कारण उनका कभी अपने शिशु के साथ संपर्क ही नहीं रहा।

iii. शिशु की मुसकान से कवि का परिचय शिशु की माँ के माध्यम से हुआ। यदि वह सहायता नहीं करती तो कवि आनन्ददायक कोमल व मधुर मुसकान न देख पाता | शिशु की मां के माध्यम से कवि अपने शिशु की दंतुरित मुस्कान को देख पाया। वह बच्चे की मां को इसके लिए धन्यवाद भी देता है जिसने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन उचित प्रकार से कर उसके पुत्र को मुस्कान से आनंदित होने का मौका दिया।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही चार के उत्तर दीजिये:

i. निराला जी के द्वारा रचित 'उत्साह' एक आह्वान गीत है | इसमें कवि ने बादलों को संबोधित किया है | वह समाज में परिवर्तन लाना चाहता है | उसने बादलों को क्रांति का अग्रदूत बताया है जो पीड़ित लोगों के मन को शांति प्रदान करता है |

ii. 'संगतकार' त्याग की मूर्ति है क्योंकि उसका संपूर्ण-जीवन मुख्य गायक के लिए अर्पित हो जाता है वह सर्वथा सक्षम होते हुए भी अपनी सामर्थ्य मुख्य गायक की सफलता के लिए अर्पित कर देता है। वह नहीं चाहता कि मुख्य गायक से आगे निकल जाए। मुख्य गायक संगतकार के प्रति प्रायः सम्माननीय भाव रखता है।संगतकार मुख्य गायक की असफलता को सफलता में बदल देता है, और मुख्य गायक के स्वर को ऊँचा उठाने का हर समय प्रयास करता है। संगतकार अपने गुणों सामर्थ्य और अपनी पहचान को छुपाकर मुख्य गायक का ही साथ देता है जिससे मुख्य गायक एक नई ऊंचाइयों पर पहुंच जाता है और उसे नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाला एकमात्र संगतकार ही होता है।इसलिए संगतकार त्याग की प्रतिमूर्ति बना रहता है।

iii. 'तन सुगंध शेष रही बीत गई बीत यामिनी' इस पंक्ति के आधार पर कवि कहना कहना चाहता है कि प्रेयसी के साथ बिताए गई सुखद रात बीत चुकी है अब उसके शरीर की सुगंध शेष है जो आज भी महक रही है अर्थात सुखमय समय तो बीत चुका है किंतु वे स्मृतियां अब भी आनंदित कर कर रही हैं। सुख के दिन बीत जाने के बाद उसकी स्मृति रह जाती है,जो वर्तमान को और दुखद बना बना देती है। अतः हमें विगत स्मृतियों भुलाकर अपने वर्तमान को आनंददायक बनाना चाहिए।

iv. कन्यादान कविता माँ अपनी बेटी के बारे बतातीं है कि उसे अभी सांसारिक व्यवहार का, जीवन के कठोर यथार्थ

का ज्ञान नहीं था। बस उसे वैवाहिक सुखों के बारे में थोड़ा-सा ज्ञान था। जीवन के प्रति लड़की की समझ सीमित थी। अर्थात् वह विवाहोपरांत आने वाली कठिनाइयों से परिचित नहीं थी। साथ ही वह समाज के छल-कपट को समझ नहीं सकती ।

v. लक्ष्मण ने सीता स्वयंवर में मुनि परशुराम को चुनौती दी क्योंकि परशुराम बार-बार क्रोधित होकर लक्ष्मण को फरसे का भय दिखा रहे थे। वे बार-बार अपनी वीरता का बखान करते हुए लक्ष्मण को भयभीत करने का प्रयास कर रहे थे |

लक्ष्मण ने परशुराम को चुनौती देते हुए कहा कि वीर लोग मैदान में वीरता सिद्ध करते हैं | वे इस प्रकार अपने प्रताप का गुणगान नहीं करते |

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो के उत्तर दीजिये:

1. भोलानाथ का अपने पिता से अत्यधिक जुड़ाव था फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। मेरे अनुसार इसके निम्नलिखित कारण हो सकते हैं-

   i. जब भी बच्चा किसी परेशानी में होता है तो वह स्वयं को माँ के पास ही सुरक्षित महसूस करता है। परेशानी में उसे पिता का साथ नहीं भाता ।
   ii. विपदा के समय मां का प्यार भरा स्पर्श घाव पर मरहम का काम करता है।
   iii. माँ ममता और वात्सल्य की खान होती है इसलिए जब बच्चे को कोई भी परेशानी होती है तब वह माँ के पास ही जाता है पिता के पास नहीं।
   iv. विपदा के समय बच्चे को प्यार और दुलार की जरूरत होती है और ये उसे माँ की गोद में ही मिलती है। जितनी कोमलता माँ की गोद में मिलती है उतनी पिता के पास नहीं मिलती।
   v. बच्चा अपनी माँ से भावनात्मक रूप से अधिक जुड़ाव महसूस करता है क्योंकि माँ बच्चे की भावनाओं को अच्छी तरह समझती है।
   यही कारण है कि बच्चा माँ की गोद में ही सुख, शान्ति और चैन का अनुभव करता है।

2. नाक मान - सम्मान एवं प्रतिष्ठा का सदा से ही प्रतीक रही हैं। इसी नाक को विषय बनाकर लेखक ने देश की सरकारी व्यवस्था, मंत्रियों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की गुलाम मानसिकता पर करारा प्रहार किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में अंग्रेजों की करारी हार को उनकी नाक कटने का प्रतीक माना, तथापि स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी भारत में स्थान-स्थान पर अंग्रेजी शासकों की मूर्तियाँ स्थापित हैं, जो स्वतंत्र भारत में हमारी गुलाम या परतंत्र मानसिकता को दिखाती हैं। हिंदुस्तान में जगह - जगह ऐसी ही नाकें खड़ी इन नाकों तह यहाँ के लोगों के हाथ पहुँच गए थे , तभी तो जार्ज पंचम की नाक गायब हो गयी थी |जॉर्ज पंचम की मूर्ति की नाक एकाएक गायब होने की खबर ने सरकारी महकमों की रातों की नींद उड़ा दी। सरकारी महकमें रानी एलिजाबेथ के आगमन से पूर्व किसी भी तरह जार्ज पंचम की नाक लगवाने का हर संभव प्रयास करते हैं। इसी प्रयास में वह देश के महान देशभक्तों एवं शहीदों की नाक तक को उतार लाने का आदेश दे देते हैं किन्तु उन सभी की नाक

जार्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली, यहाँ तक कि बिहार में शहीद बच्चों तक की नाक जार्ज पंचम से बड़ी निकलती है।अर्थात यहाँ के नेता एवं बच्चों का सम्मान जार्ज पंचम से अधिक था |

3. सीमा पर तैनात सैनिकों को देखकर लेखिका का मन उन फौजियों के प्रति श्रद्धा से नतमस्तक हो गया। वे सोचने लगी कि ये फौजी कितनी कठिनाइयों का सामना करते हैं। हम चैन की नींद सो सकें इसके लिए वे एक पल भी नहीं सोते। शीत में चुस्त रहकर सीमा की रखवाली करते हैं। वैशाख में हम लोग वहाँ ठिठुरने लगते हैं। पौष और माघ के महीनों में तो वहाँ पेट्रोल के अलावा सब कुछ जम जाता है। ऐसी विकट परिस्थितियों में खाने-पीने के अभाव को झेलते हुए वे सीमा की रक्षा करते हैं। कई बार तो इन्हें अपनी जान से हाथ तक धोना पड़ता है पर वे इसकी परवाह नहीं करते क्योंकि उनके लिए तो देश ही सर्वोपरि है ।

Section D

11. मोबाइल फोन वर्तमान समय में अत्यावश्यक हो गया है। आज हर बच्चे, बूढ़े, युवक की यह अनिवार्य जरूरत बन चुका है। कोई आप के साथ हो या न हो किन्तु मोबाइल जरूर आपके साथ होना चाहिए। आप कहाँ गए हैं, किसी मुसीबत में तो नहीं हैं तथा आपकी क्या जरूरत है-मोबाइल फोन के माध्यम से पलक झपकते इन सब बातों की जानकारी प्राप्त हो जाती है। सच तो यह है कि मोबाइल जेब में होने से आप सारी दुनिया से जुड़े रहते हैं। कुल मिला कर मोबाइल होने से दुनिया हमारी कहावत चरितार्थ होती है।
वर्तमान युग सूचना और संचार का युग है जिसमें मोबाइल के बिना काम नहीं चल सकता। मोबाइल में केवल फोन की सुविधा नहीं है। अपितु अब तो स्मार्ट फोन में और भी तमाम सुविधाएँ है। इंटरनेट की सुविधा भी अब मोबाइल पर उपलब्ध है। सोशल मीडिया-फेसबुक, ट्विटर, आदि के साथ आप अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं। कम्प्यूटर पर जो सुविधाएँ उपलब्ध हैं, वे अब मोबाइल पर भी उपलब्ध हैं। नेट बैंकिंग, ई-कॉमर्स, ई-रिजर्वेशन जैसी तमाम उपयोगी सेवाएँ अब मोबाइल पर मिल जाती हैं। समय के साथ -साथ मोबाइल के रूप-रंग कार्य क्षमता में निरंतर परिवर्तन आया है। जिसके कारण लोग लंबी -लंबी लाइनों से बच कर घर बैठे-बैठे ही मनचाही सुविधाओं का उपभोग करते हैं।
मनोरंजन का भी यह प्रमुख साधन है। अनेक प्रकार के गेम्स मोबाइल पर उपलब्ध हैं। एफ एम रेडियो के साथ-साथ संगीत का आनन्द भी मोबाइल से ले सकते हैं। इसमें कैमरा, घड़ी, टार्च की सुविधाएँ भी हैं। सच तो यह है कि मोबाइल के चलन से अब लोगों ने घड़ी बाँधना बंद कर दिया है। लंबी यात्राओं की बोझिलता से बचने के लिए अब इस पर तीन घंटे के रोचक सिनेमा के अलावा राजनीति की गरमागरम बहस का आनंद भी मोबाइल पर लिया जा सकता हैं।
किन्तु यह भी सच है कि आज युवा-पीढ़ी मोबाइल का दुरुपयोग अधिक कर रही है। गंदी पिक्चरें देखना, अपनी सहपाठियों के फोटो एवं गंदी तस्वीरें दोस्तों को भेजना, एस. एम. एस. की सुविधा का दुरुपयोग करना तथा नंगी पिक्चर्स देखना आज युवाओं का चलन बन गया है। हमें इन सबसे दूर रहना चाहिए तभी मोबाइल हमारे लिए लाभकारी बन सकेगा।

OR

प्रदूषण का अर्थ:-

विज्ञान के इस युग में मानव को जहाँ कुछ वरदान मिले हैं वहीं कुछ अभिशाप भी मिले हैं | प्रदूषण भी विज्ञान की कोख में

से जन्मा एक ऐसा अभिशाप है जिसे सहने के लिए सम्पूर्ण मानव जाति मजबूर है | प्रदूषण का अर्थ है प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शुद्ध वातावरण मिलना । प्रदूषण के कारण आज मौसम चक्र भी बिगड़ गया है | मनुष्य को साँस लेने से पहले भी सोचना पड़ता है | प्रदूषण के मुख्यतः तीन प्रकार है। प्रमुख प्रदूषण हैं---वायु प्रदूषण, जल-प्रदूपण और ध्वनि प्रदूषण।

वायु प्रदूषण:-

इस प्रदूषण का प्रभाव महानगरों में अधिक नज़र आता है | वहाँ चौबीसों घंटे कल-कारख़ानों तथा मोटर-वाहनों का काला धुंआ इस तरह फैल गया है कि स्वस्थ वायु में साँस लेना दूभर हो गया है। यह समस्या सघन आबादी वाले क्षेत्रों में अधिकाधिक होती है क्योंकि वहाँ वृक्षों का अभाव होता है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में वृक्षों को काटकर लोगों के रहने के लिए जगह मुहैया करवाई जाती है | कल-कारखानों की संख्या भी वहाँ अधिक होती है | उनसे और वाहनों से निकलने वाली दूषित वायु में साँस लेना भी दूभर होता है | अतः अस्थमा जैसी श्वास संबंधी बीमारियाँ बढ़ती जा रही हैं |

जल प्रदूषण:-

कल कारखानों के दूषित जल को नदी-नालों में बहा दिया जाता है जो जल-प्रदूषण पैदा करता है। बाढ़ के समय तो कारखानों का दुर्गन्धयुक्त जल सब नदी नालों में घुल-मिल जाता है। इससे पेट संबंधी अनेक बीमारियाँ पैदा होती हैं।

ध्वनि प्रदूषण:-

मनुष्य को रहने के लिए शांत वातावरण चाहिए। परंतु आजकल कल-कारखानों का शोर, यातायात का शोर, मोटर-गाड़ियों की चिल्ल-पों, लाउडस्पीकरों की कर्णभेदक ध्वनि ने बहरेपन और तनाव को जन्म दिया है।

प्रदूषण के दुष्परिणाम:-

उपर्युक्त प्रदूषणों के कारण मानव के स्वस्थ जीवन को खतरा पैदा हो गया है। वह खुली हवा में लंबी साँस लेने तक को तरस गया है। प्रदूषित जल के कारण कई बीमारियाँ फसलों में चली जाती हैं जो मनुष्य के शरीर में पहुँचकर घातक बीमारियाँ पैदा करती हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कारण न समय पर वर्षा आती है और न ही मौसम चक्र सही चलता है | सूखा, बाढ़, ओला आदि प्राकृतिक प्रकोपों कारण भी प्रदूषण है।

प्रदूषण के कारण:-

प्रदूषण को बढ़ाने में कल कारखाने, वैज्ञानिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन, ऊर्जा संयंत्र आदि दोषी हैं। वृक्षों को अंधाधुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ा है। घनी आबादी वाले क्षेत्रों में हरियाली न होने से भी प्रदूषण बढ़ा है।

निवारण के उपाय:-

विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों से बचने के लिए चाहिए कि अधिकाधिक वृक्ष लगाए जाएँ, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों

के किनारे घने वृक्ष हो। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों । कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए और उनसे निकले प्रदूषित जल को नष्ट करने के उपाय सोचने चाहिए।

OR

भारत अनेक धर्मों, जातियों और भाषाओं का देश है। फिर भी हमारे देश में विविधता में एकता निहित है। जब कभी उस एकता को खंडित करने का प्रयास किया जाता है| भारत का प्रत्येक नागरिक सजग हो उठता है। राष्ट्रीय एकता को खंडित करने वाली शक्तियों के प्रति आन्दोलन आरंभ हो जाता है। यही भारतीय एकता है। भौगोलिक रूप से सीमाओं में घिरा कोई भूभाग तभी देश या राष्ट्र कहलाएगा जब वहाँ के रहने वाले लोग उससे प्रेम करेंगे और यह प्रेम तभी उत्पन्न होगा जब उनमें आपस में भाईचारा एकता होगी। राष्ट्रीय एकता का अभिप्राय है कि सम्पूर्ण भारत भौगोलिक अखंडता के साथ ही सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं वैचारिक रूप से एक हो। यहाँ कर्म -कांड, पूजा-पाठ, खान-पान, रहन-सहन और वेशभूषा में अन्तर हो सकता है, इनमें अनेकता हो सकती है किन्तु हमारे राजनीतिक और वैचारिक दृष्टिकोण में एकता होती है और इस प्रकार अनेकता में एकता ही भारत की प्रमुख विशेषता बन जाती है जिसके दर्शन भारत के कोने-कोने में दिखाई देते है। इतनी विभिन्नताओं से युक्त भारत तरह-तरह के फूलों से युक्त किसी गुलदस्ते के समान सुशोभित होता है। राष्ट्रीय एकता के मार्ग में अनेक बाधाएँ हैं। इनमें से कुछ बाधाएँ निम्नलिखित हैं-

अ) भाषागत विवाद

(ब) प्रान्तीयता या प्रादेशिकता की भावना

(स) साम्प्रदायिकता

(द) जातिगत विवाद

आज राष्ट्र विभिन्न विरोधी ताकतों एवं समस्याओं से जूझ रहा है। आज तो हालात ये हो गए हैं कि उसे बाहरी शत्रुओं से ज्यादा भीतरी शत्रुओं का भय है जो मौके का फायदा उठाने में जुटे हैं। लोग छोटी छोटी समस्याओं को राष्ट्रीय समस्या बना रहे हैं।

राष्ट्रीय एकता के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर तभी किया जा सकता है जब हम सभी एकजुट हो जाएँ। इसके लिए आवश्यक है कि उन्हें एक ही राष्ट्र भाषा में शिक्षा दी जाए। जातिवाद का उन्मूलन करते हुये सर्व धर्म समभाव की स्थापना की जाए। शिक्षा का प्रसार किया जाए। सबके हित की भावना को सर्वोपरि रखा जाए। राजनीति का प्रयोग जनहित के लिए किया जाए ताकि एकता की भावना का विकास हो। राष्ट्र की प्रगति, सुख-शान्ति प्रशासनिक सुव्यवस्था एवं देश के शत्रुओं से सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय एकता की परम आवश्यकता है। यदि हम भारतवासी किसी कारणवश छिन्न-भिन्न हो गए, तो हमारी पारस्परिक फूट को देखकर अन्य देश हमारी स्वतन्त्रता को हड़पने का प्रयास करेंगे। आज जबकि चीन, पाकिस्तान को खुले या छिपे तौर पर परमाणु अस्त्र तक बनाने में सहायता कर सकता है, तब राष्ट्रीय एकता बनाए रखने की आवश्यकता और ज़िम्मेदारी दोनों बढ़ जाती है।

12. सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय

शिक्षा भारती पब्लिक स्कूल

द्वारका सेक्टर - 7, नई दिल्ली

विषय : सहपाठी गौतम सिंह की साइकिल चोरी की सूचना के सम्बन्ध में

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि हमारे विद्यालय में आए दिन छात्रों की कोई न कोई वस्तु गुम हो रही है। कभी किसी की पुस्तक तो कभी किसी का लंचबॉक्स चोरी हो जाता है। इस सन्दर्भ में कई बार स्वयं चोरों का पता लगाने की कोशिश की और सफलता न मिलने पर शिक्षक-शिक्षिकाओं से शिकायत भी की । उनके द्वारा कठोर कार्यवाही करने के बाद भी चोरी की घटनाओं को नियन्त्रित नहीं किया जा सका तथा वास्तविकता का पता नहींलगाया जा सका। हमारी कक्षाध्यापिका ने चोर का पता लगाने वाले को प्रार्थना सभा में सम्मानित करने की भी घोषणा की है। कल ही की बात हैं मेरे सहपाठी प्रकाश सिंह की साइकिल विद्यालय के साइकिल स्टैंड से चोरी हो गयी हैं। इस सन्दर्भ में साइकिल स्टैंड के कर्मचारी तथा सुरक्षा गार्ड को तत्काल ही अवगत करा दिया गया था परन्तु बड़े खेद का विषय है कि अभी तक कोई भी कार्यवाही नहीं की गयी है। अतः श्रीमान जी से निवेदन है कि इस विषय को गम्भीरता से लेते हुए स्वयं कठोर कदम उठाये और विद्यालय परिसर में सी°सी °टी वी भी लगवाएँ । इस मामले में पुलिस में एफ.आई.आर.दर्ज कराने की कृपा करें क्योंकि अब तक पाँच-छह साइकिलें चोरी हो चुकी हैं ।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

धीरेन्द्र सिंह

कक्षा - X-A

दिनांक 17 जनवरी, 2019

OR

नेशनल पब्लिक स्कूल

लवकुश नगर, जोधपुर

दिनांक: 17 जनवरी, 2019

प्रिय मित्र अरुण

नमस्कार

काफी दिनों से तुम्हारा कुशल समाचार प्राप्त नहीं हुआ। घर में सब कैसे हैं। मैंने नेशनल पब्लिक स्कूल जयपुर में 11वीं कक्षा में प्रवेश ले लिया है तथा मुझे हॉस्टल भी मिल गया है। अभी पिछले सप्ताह पास के एक गाँव में हमारे विद्यालय के 50 छात्रों का राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत कैम्प लगा था। जिसमें मुझे भी सम्मिलित होने का अवसर मिला। हमारा मूल उद्देश्य गाँव में सफाई अभियान चलाना था | जिसके अंतर्गत हमें गाँव वालों को जागरूक करने के साथ उन्हें सफाई के महत्त्व से भी अवगत कराना था । हमारे प्रभारी अध्यापक पाण्डेय जी के नेतृत्व में 10-10 छात्रों की टोली बनाई गई और सारे गाँव को पाँच भाग में बाँटकर हमने सफाई प्रारम्भ की । विश्वास करें कि थोड़ी ही देर में हमारी टोलियों में स्थानीय नवयुवकों भी अच्छी खासी तादाद श्रमदान हेतु सम्मिलित हो गई और सात दिनों के इस शिविर के उपरान्त गाँव पूरी तरह साफ-सुथरा हो गया। उन नवयुवको में से कई हमारे बहुत अच्छे मित्र बन गए। दिन भर कार्य करने के बाद हम सब अपने शिविरों के सामने इकट्ठा होकर कबड्डी, खो-खो आदि खेल खेलते थे।

यही नहीं प्रतिदिन सांयकालीन सत्र गाँव के मुखिया जी की अध्यक्षता में एक सभा की जाती | जिसमें ग्रामीण जनों के सम्मुख कोई विद्वान भाषण देता था। भाषण का विषय विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं एवं साफ-सफाई से सम्बंधित होता था।

शिविर के समापन पर पूरा गाँव हमें जागरूक दिखाई पड़ा। अंतिम दिन मुखिया जी हमारे कार्यों की प्रशंसा की और हमारे लिये शानदार भोज का आयोजन किया । विद्यालय में भी सभी के सामने प्रधानाचार्य जी ने हमें सम्मानित किया।

ऐसे शिविरों को यही उद्देश्य भी होता है। जब भी जोधपुर आओगे तब तुम्हें उस गाँव के भ्रमण पर अवश्य ले चलूँगा और अपने उन नए मित्रों से अवश्य मिलवाऊँगा। शेष कुशल है। अपने माता-पिता को मेरा प्रमाण कहना।

पत्र की प्रतीक्षा रहेगी

तुम्हारा मित्र

मोहित कुमार

कक्षा 11 (अ)

13.

देवभूमि उत्तराखंड में आपका स्वागत है!

हरियाली यहाँ अपार है, बर्फ का अंबार है।

देवों की महिमा का आधार है, प्रकृति लुटाती जहाँ प्यार है।

उत्तराखंड राज्य पर्यटन विभाग की ओर से आप सबका हार्दिक स्वागत है।

सेवा का मौका दें और उत्तराखंड की संस्कृति को जानें

टोल फ्री नं.-१८०० १८० ####

OR

विश्वास सिक्योरिटी सर्विसेज कम्पनी

शारीरिक दक्ष व मैट्रिक पास सिविल (सुपरवाइजर), गार्ड की आवश्यकता है।

वेतन- **25,000** से **40,000/-** प्रति माह

ड्यूटी 8 घंटे, रहना + खाना मुफ्त

25 ओखला फेज - III, नई दिल्ली

दिनांक २५ से ३० मार्च २०१९ तक संपर्क करें

समय प्रात: १० से सायं ५ बजे तक

दो फोटो सहित - 984575XXXX